Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ2407IIIIV12P0015

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research
Issue–II(II), Volume–XII

आंध्र के लोक साहित्य में राम कथा

एन हरि प्रसाद,
हिंदी प्राध्यापक,
शासकीय विध्यालय (स्वायत्ता),
पेनुगोंडा ,अनंतपुरम. आंध्र प्रदेश, भारत

डॉ. हरि रामप्रसाद,
हिंदी विभागाध्यक्ष,
शासकीय विध्यालय (स्वायत्ता),
काकिनाडा - ५३३ ००१,आंध्र प्रदेश, भारत.

Abstract -

राम कथा भारतीयों को एकता के सूत्र में फ़िरोने वाली अमर कथा है। राम कथा संपूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि भारत के बाहर विदेशों में भी प्रचलित है। राम कथा का मूल स्रोत वाल्मीकि रामायण है। रामायण भारत में एक धार्मिक ग्रंथ तथा एक दर्शन शास्त्र के रूप में लोक प्रिय है। इस के कारण रामायण भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग के जीवन के साथ घुल-मिल गया है। भारतीय उसमें अंकित जीवन के आदर्श को अपना अनुशासन मानते है। भारतीयों पर राम कथा की अमिट छाप का यह भी कारण है कि भारत के प्रत्येक भाषा के कवियों ने राम कथाश्रित काव्य लिखा है। भारत की विविध भाषाओं में प्राप्त होनेवाले राम कथा काव्यों में प्रादेशिक जीवन - संस्कृति के सापेक्ष का अनेक प्रक्षेपण किये गये है।

Keyword - राम कथा, आंध्र, लोक साहित्य

राम कथा से संबंधित शिष्ट साहित्य का अपार सागर है लेकिन अशिष्ट एवं मौखिक साहित्य परम्परा अद्भुत है। वाल्मीकि द्वारा प्रणीत तथा भारत भर में प्रचलित राम कथा को आंध्र के लोक गायकों ने भी ग्रहण किया है। वे यह प्रक्रिया अपने जीवन के अनुकूल ही ग्रहण किया है। इसलिए लोक - रामायणों में आवल्मीकीय प्रसंग दिखाई पड़ते हैं। ये प्रसंग लोक कवि गायकों के जीवन विधान, आचार - व्यवहार और विश्वास-स्वभावों से जुड़े रहने के कारण प्रादेशिक संस्कृति के अक्षय भंडार होते हैं। उस में काल्पनिक शक्ति एवं जीवनानुकूल नए प्रसंग जोड़ कर और सार्थक व संप्रेषणीय बनाया है यहाँ ऐसे ही कुछ प्रसंग रुपी प्रक्षेपकों तथा उन में परावर्तित आंध्र की प्रादेशिक लोक संस्कृति पर विजय किया जा रहा है।

आंध्र में लोक रामायणों की सुसंपन्न परंपरा है। साथ ही उन में व्यंजित अवाल्मीकीय प्रक्षेपकों की संख्या भी अधिक है। आंध्र के लोक रामायणों में व्यंजित ये अवाल्मीक प्रक्षेपकों की संख्या भी अधिक हैं। इन अवाल्मीक प्रक्षेपकों के पीछे लोक कवियों की असीम सृजनात्मक शक्ति तथा अद्भुत अनुभूतिजन्य प्रतिभा रही है। तेलुगु के प्रसिध्द लोक साहित्य

वेद आचार्य बिरुदुराजु रामराजु ने राम कथा संबंधी लोक कवियों की काव्य प्रतिभा के बारे में अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए हैं - "लोक कवियों ने राम और सीता से तादाम्य बनाया है। उन के लिए राम और सीता अवतारी नहीं है। अपना जीवन ही उन का जीवन है। अपने सुख -दुख ही इन पौराणिक दंपति के सुख -दुःख हैं। इसी कल्पना के साथ ही उन्होंने तादाम्य बनाया है। उन्होंने अनुभव किया की अपने नित्य जीवन की प्रत्येक रेखा, प्रत्येक विश्वास राम और सीता के हैं। आखिर इन कवियों के द्वारा वर्णित जीवनवृत्त उनके अपने नहीं है। राम और सीता के भी नहीं है। वे मात्र लोक सामान्य हैं। इसी को शास्त्रकारों ने साधारणीकरण कहा है। उन की मानसिकता के अनुसार उनके द्वारा कल्पित अवाल्मीक विशेषतायें भी अनेक हैं"।1 लोक कवियों के इस विशिष्ट दृष्टिकोण के कारण ही अवाल्मीक प्रक्षेप तद्वारा उनकी सांस्कृतिक विशेषताओं लोक रामायणों में जगह बना ली है।

अवाल्मीक प्रक्षेपकों का एक कारण लोक जन का स्वभाव भी है। लोक जनता सरल स्वभाव की होती है। वे धोखादड़ी से कोसो दूर रहते हैं। लोक जनता की इस मानसिकता ने भी लोक रामायणों में अवाल्मीक प्रेक्षेपको के लिये अवसर प्रदान किया। लोक कवि सहज भाव संपदा के मेधावी है। हनुमान उनके इष्ट देव है। हनुमान के द्वारा कुछ ही सही बंदरी चेष्टाएँ कराकर विनोद प्राप्त किए बिना उनको मजा नहीं आता न ही तृप्ति मिलती है। "लक्ष्मण देवर नव्वु" (लक्ष्मण देव की हंसी) शीर्षक कथागीत में इस प्रकार की एक अद्भुत घटना का प्रक्षेपण है। भाई समेत राम के विवाह की रात को महाभोज है। भोज में अपने को बुलावा नहीं मिला समझकर हनुमान रूठ गया है। यह रूठना भी अभिमान धनी लोक जनता का ही रूठना है। बहुत देर तक प्रतीक्षा करके आखिर निराशा होकर हनुमान किसी के नहीं बुलाने पर भी धीरे-धीरे भोज के पास पहुंचता है। भोज के पास पहुंचनेवाले हनुमान को देखकर राम उसे शांत करने की कोशिश इस प्रकार करता है-

"इंटी वाडवु ग़नुक उरुकुंटिमि
पोत्तुन गुर्चोम्मि उत्तमपुरुष
नीवुंडग गदा दम्मुल पंक्ति
भुजिइमंप कालिगीतिनि हनुमन्न विनुमा
पोत्तुन गुरचोम्मि उत्तम पुरुष"2

अर्थात राम कह रहे है आप को हम घरवाले हो समझकर नहीं बुलाया है। उत्तम पुरुष हमारे साथ बैठो। तुम्हारे रहने के कारण ही आज भाईयों के साथ बौठकर खाने का अवसर मिला है। सुनो भाई हनुमान। साथ बैठो उत्तम पुरुष।

आंध्र के प्रसिध्द लोक कला कोलाटम नृत्यरीति में रावण लंका के सामने अयोध्या बेकार ठहराना चाहता है। इस प्रसंग से संबंधित रावण और हनुमान के संवाद को देख सकते हैं

"माटि माटिकी नन्नु
ओरोरी अंटाव ये राजु बंटुवुरा
श्रीराम बंटुनु रा नाराजु सुग्रीव
अंजना तनयुड अनुमन्न नापेरु
मी पट्ट्नमु लोन मी पट्ट्नमु लोन
इटलांटि रच्चलु एनन्नी गलवु रा ओरोरि
मा पट्ट्नमु लोन मा पट्ट्नमु लोन
इटलांटि रच्चलु जलाटि बंडलु ओरोरि
मी पट्ट्नमु लोन मी पट्ट्नमु लोन
इटलांटि मेडलु एनन्नी गलवु रा ओरोरि
मा पट्ट्नमु लोन मा पट्ट्नमु लोन
इटलांटि मेडलु बोममरिल्लेनु रा ओरोरि
मी पट्ट्नमु लोन मी पट्ट्नमु लोन
इटलांटि वनमुलु एनन्नी गलवु रा ओरोरि
मा पट्ट्नमु लोन मा पट्ट्नमु लोन
इटलांटि वनमुलु कूराकु पोदलेरा रा ओरोरि"3

इस का भाव है कि रावण हनुमान से पूछते है कि बार-बार मुझे तू तू कहकर संवाद कर रहे हो, तुम किसके नौकर हो? हनुमान उत्तर देता है कि मै अंजनी का पुत्र और श्रीराम का नौकर हूँ, सुग्रीव हमारा राज है, मेरा नाम हनुमान है। फिर रावण पूछता है कि तेरे नगर में कितने मंडप है ? हनुमान उत्तर देता है कि इस प्रकार के अनेक मंडप हमारे नगर में हैं। फिर रावण पूछता है कि तेरे नगर में इस प्रकार के बड़े-बड़े भवन कितने हैं? हनुमान गर्व से उत्तर देता है कि हमारे नगर में इस प्रकार के भवन बच्चों के खिलौने के सादृश्य अनेक हैं। फिर आगे रावण पूछता है कि तेरे नगर में इस प्रकार के सुन्दर वन कितने है? हनुमान उत्तर देता है कि हमारे नगर में इस प्रकार के उपवन साग-सब्जी की तरह अनेक हैं। इस प्रकार तूमाटी

दोनप्पा जी ने लम्बे-लम्बे कथागीतों के अतिरिक्त राम कथा पर आधारित छोटे-छोटे लोकगीतों में भी अनेक सुंदर प्रसंगों का मार्मिक ढंग से चित्रण किया है।

आनंदोत्सव और परंपराएँ किसी भी संस्कृति के प्रामाणिक धरोहर होते हैं। किसी भी परिवार में शिशुओं का जन्म आनंदोत्सव का अवसर होता है। इस सुअवसर पर आंध्र में परिवार के सभी एक निश्चित रीति के अनुसार नवजात शिशु को उपहार देते हैं। आंध्र लोकसाहित्य में इस अवाल्मीकीय प्रक्षेपक के लिए अवसर की तलाश की है। वाल्मीकि आश्रम में रोनेवाले लवकुश का प्रसंग यों देख सकते है। रोनेवाले अपने बेटों को शांत करनेवाली सीता के मुह से गीत के रूप में अपनी इस प्रक्षेपण-इच्छा की पूर्ती की है। बारी-बारी से परिजनों के व्दारा प्राप्त होनेवाले उपहारों की लालच दिखाकर सीता अपने बेटों को शांत करने की चेष्टा करती है।

"नान्ना एडवकुरा कुश राजु एडवकुरा
लवराजु एडवकुरा
अईवध्य बलूड़ा मातान्ड्री एडवकुरा
पल पूसल्लो नुसि पट्टांगी नेननुचु
कोडूका पट्टांगी नेननुचु
नी भव्य भूदेवि वच्चु एडवकुरा
वच्चु एड़कुरा कोडूका तच्चि एडवकुरा
निकिच्चि एडकुरा निनु एत्ती मुद्दाडि एडवकुरा
अईवध्य बलूड़ा मातंड्री एडवकुरा
दिष्टि पूसलुगानु नरदिष्टंगी नेननुचु
कोडूका दुष्टंगी नेननुचु
लम्मा कौसल्या वाच्चु एडवकुरा"4

अर्थात वो मेरे बेटे मत रो। तुम्हारी नानी भूदेवी आयेगी। तुम्हें रेशमी कुरता लायेगी। तुम्हारी दादी कौशल्या आएगी। तुम्हे बचाने घुंघुची लेकर आयेगी। हे अयोध्या के वारीस मेरे लाडले बेटे मत रो। स्पष्ट है कि आंध्रा में बच्चों का पहला कुरता नानी ही उपहार के रूप में देने की प्रथा है। वह भी रेशम का होता है। दूसरा दीट से बच्चों को बचाने घुंघुचियां पहनाई जाती हैं। ये दादी माँ ही लाती हैं। ये बच्चों के जन्म समय परिजन उपहार के रूप में नवजात

शिशु को देते हैं। लोक कवि ने अवसर ताड़कर इस प्रक्षेपक को राम कथा में जोड़ दिया जाता है।

इस प्रकार आंध्र के लोक साहित्य में राम कथा के अनेक अवाल्मीक प्रक्षेपक प्राप्त होते हैं। ये सब आंध्र के लोक कवियों की अद्भुत सृष्टि है। इन के होने से ही आंध्र के लोकरमायण स्थानीय संस्कृति के साथ -साथ राष्ट्र संस्कृति की शोभा बडाती है।

संदर्भ :

१. जानपद गेय साहित्यामु, आ. बी. रामराजू, पृ : ९३-९४ .
२. स्त्रीला रामायणपु पटलु, सं. श्री कृष्णश्री, पृ : २४१ .
३. आंध्र लोक साहित्य में उत्तररामायण, आए. एन. चंद्रशेखर रेड्डी, पृ ४०-४१ .
४. तेलुगु जानपद उत्तररामायण, आए. एन .चंद्रशेखर रेड्डी, पृ ९९-१०० .